International Journal of Applied Research 2019; 5(8): 27-29

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(8): 27-29
www.allresearchjournal.com
Received: 19-06-2019
Accepted: 21-07-2019

उमेश कुमार दुबे
इतिहास विभाग श्रद्धानंद कॉलेज, अलीपुर, दिल्ली, भारत

Correspondence
उमेश कुमार दुबे
इतिहास विभाग श्रद्धानंद कॉलेज, अलीपुर, दिल्ली, भारत

बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर और मानवाधिकार

उमेश कुमार दुबे

प्रस्तावना

संविधान शिल्पी डॉ. भीमराव अम्बेडकर मानवतावादी चेतना से ओत-प्रोत नेता थे| उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में मजदूरों, किसानो, दलितों ,पिछड़ो और स्त्रियों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया| म्हार जाति में जन्म लेने के कारण बचपन से ही यातना, प्रताड़ना और मानसिक पीड़ा झेला था| बचपन से ही मिली इस पीड़ा ने बाबा साहब की दशा और दिशा तय कर दी| उन्होंने यह निर्णय लिया की वह बड़े होकर दलितों और पिछड़ो के लिए संघर्ष करेगे| उनके अथक प्रयासों से ही निम्न जातियों को समाज में समानता का अधिकार प्राप्त हुए है|

प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज जाति व्यवस्था ,वर्ण व्यवस्था और अस्पृश्यता की खाई मे विभाजित था| जिसमें निम्न जातियों की स्थिति बहुत दयनीय थी| बाबा साहब ने स्वंय बचपन से इस अमानवीय दंश को झेला था| अम्बेडकर जी जैसे -जैसे बड़े होते गये, उनको यह बात कटुता के साथ अनुभव होती गई की अस्पृश्यता का अपमान और पीड़ा क्या होती है| बाबा साहब और उनके भाई को स्कूल में कक्षा के कोने में बैठना पड़ता था| इनकी उत्तर पुस्तिकाओ को न तो अध्यापक छूता था न विद्यार्थी| जब स्कूल में इन दोनों भाइयो को प्यास लगती थी तो कोई तीसरा व्यक्ति इनको पानी पिलाता था| ये लोग अपने हाथ से नल नही चला सकते| इन घटनाओ का अम्बेडकर के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा| एक बार उन्होंने सयाजीराव गायकवाड से कहा था कि- 'महाराज ! मैं अध्ययन कर पता लगाऊंगा कि, जिस समाज में मेरा जन्म हुआ है, उसकी ऐसी दुर्दशा क्यों है, और उसकी दुर्दशा के कारणों का पता लगा कर दूर करने की कोशिश करूंगा|' और बाबा साहब ने जो कहा उसे अपने जीवन में चरितार्थ किया|

भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था व्याप्त थी| समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र के रूप में विभाजित था| शुद्रो को अछूत मानकर उनके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया जाता था| उनको नारकीय जीवन जींवन जीने के लिए मजबूर किया जाता था| शुद्रो को छूना भी पाप मन जाता था| यही नहीं, इन शुद्र जतियो को तालाबो, कुओं, मन्दिरों और शैक्षणिक संस्थानों में जाने की मनाही थी| इन अमानवीय नियमो को नहीं मानने वालो को बहुत कठोर दंड दिया जाता था| हम सब जानते है की वर्ण व्यवस्था ने जाति व्यवस्था को मजबूत किया है इसीलिए डॉ. साहब ने महात्मा गाँधी जी के बरक्स वर्ण व्यवस्था पर सैधांतिक बहस चलाने की बजाय व्यवहारिक रूप से स्कुलो और मंदिर में प्रवेश तथा तालाब में पानी-पीने पर ज्यादा बल दिया| जिसका परिणाम है कि आज अछूत जातियों के मन्दिर में प्रवेश पर कोई रोक-टोक नहीं है|

भारत में मजदूरों की स्थिति बहुत दयनीय थी| खासतौर से, शुद्र मजदूरों की क्योंकि उनसे बहुत ज्यादा काम लिया जाता था और बदले में बहुत कम मजदूरी दी जाती थी| मजदूरों को किसी प्रकार के कोई अधिकार प्रदान नहीं किये गये थे| बाबा साहब के ही प्रयासों से द्लित अस्पृश्य मजदूरों की भर्ती,पदोन्नत्ति और बरखास्तगी को नियंत्रित करने के लिए नियम बनाये गये| उन्होंने सरकार को सुझाव दिया की मजदूरों के कार्य के घंटे और उनकी मजदूरी निर्धारित की जाय| इसके आलावा उनकी छुट्टी और आवास की भी व्यवस्था हो, ऐसा नियम पास करवाया| आज बाबा साहब के अथक प्रयासों का ही प्रतिफल है की मजदूर मानवीय जीवन जी रहे है|

भारतीय मजदूर को मानवाधिकारों से वंचित किया गया था| उनको अपने मालिको के द्वारा किये जा रहे शोषण के खिलाफ आवाज उठाने और हड़ताल करने का अधिकार प्राप्त नही था| ऐसी परिस्थिति में जी तोड़ मेहनत करने के बावजूद मजदूरों को उनके काम के अनुसार मजदूरी नहीं मिलती थी| उनका हर तरह से शोषण किया जा रहा था| बाबा साहब इस अमानवीय व्यवस्था के खिलाफ मजदूरों को संघर्ष करने के लिए आवाज बुलंद करते है| उनका विचार था की मजदूरों को हड़ताल करने का अधिकार मिलने चाहिए ताकि वो संगठित हो क्र संघर्ष कर सके|लेकिन डॉ. अम्बेडकर का विचार था की यह नियम केवल मजदूरों के हित के लिए बिना किसी पक्षपात के विवेकपूर्ण ढंग से बनने चाहिए| इसका इस्तेमाल किसी राजनीतिक लाभ के लिए न होकर मजदूरों के अधिकार के लिए हो इसीलिए आरम्भ में डॉ. साहब ने कम्युनिस्टो के हड़ताल का विरोध किया था| क्योंकि कम्युनिस्टो के इन हड़तालो के पीछे राजनैतिक स्वार्थ निहित थे| अत: स्पष्ट है की अम्बेडकर जी मजदूरों के हड़ताल करने के अधिकार से पूरी तरह सहमत थे|

बाबा साहब ने लिखा है कि दलित समाज ने कितनी प्रगति की है इसे मैं दलित स्त्री की प्रगति से तौलता हू| बचपन में माँ ,बुआ और बहन ने रात दिन मेहनत करके खून पसीना एक करके बाबा साहब को पढ़ाया था| वे सभी उनकी प्रेरणा स्रोत थी| अम्बेडकर जी चाहते थे की घर में पत्नी की स्थिति दासी जैसी न होकर उसकी हैसियत बराबरी की हो| अत: परिवार में स्त्री की स्थिति और उसके अधिकारों को सुदृढ़ करने के लिए बाबा साहब ने शिक्षा के महत्व के साथ साथ सामाजिक कुरीतियो जैसे बाल- विवाह ,बहु-पत्नीवाद ,देवदासी प्रथा आदि के खिलाफ संघर्ष किया| निश्चित रूप से डॉ. अम्बेडकर एक महान समाज सुधारक थे, उन्होंने परिवार और समाज में नारी की स्थिति कैसी हो इस पर गहन चिन्तन किया| बाबा साहब का मानना था की परिवार और समाज में पुरूषों के साथ स्त्रियों को भी समानता और स्वतंत्रता मिले, सामाजिक आजादी के साथ आर्थिक आजादी भी मिले| इसके लिए उन्होंने दलित और गैर दलित महिलाओ को सामाजिक आन्दोलन से जोड़ा| उनका ही विचार था की परिवार में लड़की और लड़के का पालन-पोषण समान रूप से होना चाहिए| इस तरह बाबा साहब ने औरतो के अधिकारो के लिए अथक प्रयास किया| बाबा साहब के अथक परिश्रम और संघर्ष का ही परिणाम है की वर्तमान में नारी

आत्मनिर्भर और स्वतंत्र रूप से जीवन निर्वाह कर रही है| आज हर भारतीय नारी बाबा साहब की ऋणी है|

शिक्षा मनुष्य को सभ्य और सुसंस्कृत बनती है| डॉ. अम्बेडकर मानते थे की दलितों का उद्धार एक मात्र शिक्षा से ही हो सकती है| वह कहते थे कि शिक्षा शेरनी के दूध के समान है ,जिसे पीकर हर कोई व्यक्ति दहाड़ने लगता है| शिक्षा एक माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य सही और गलत का फर्क करने लगता है| इसके लिए जरूरी है की शिक्षा सस्ती से सस्ती हो ताकि गरीब से गरीब व्यक्ति भी शिक्षा प्राप्त कर सके| उनका विचार था की शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है| अतैव शिक्षा का द्वार सभी के लिए खुला होना चाहिए| डॉ.अम्बेडकर का खुद का जीवन इसका प्रमाण है की किस तरह से एक निम्न जाति में जन्म लेने के बावजूद शिक्षा के द्वारा ही समाज में पूजनीय हुए|

निश्चित रूप से बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर समाज के निम्न वर्गो के मसीहा थे| उनके संघर्षो का ही परिणाम है की आज किसान, मजदूर, दलित,पिछड़ा और स्त्रियों को मानव के रूप में जीने और समाज में रहने का अधिकार प्राप्त है| उनके सतत प्रयासों का ही प्रतिफलन है कि समाज में जाति व्यवस्था का विघटन हुआ है| दलित जातियों को समाज में विभिन्न अधिकार प्राप्त हुए| वास्तव में बाबा साहब देव तुल्य है उनको समाज का नमन है|

सन्दर्भ :

1. पाञ्चजन्य पत्रिका, अप्रैल 2015
2. दलित आन्दोलन पत्रिका, अप्रैल 2016